



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

भावनात्मक दुर्व्यवहार और वरिष्ठ नागरिकों पर इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव

Parvati Sharma
Research Scholar, (Psychology)

Dr. Neete Mehta
Research Guide

Bhagwant University Ajmer, Rajasthan, India
Email Id: parvatimahesh82@gmail.com, Mobile-9460274883

First draft received: 27.05.2024, Reviewed: 29.05.2024, Final proof received: 04.06.2024, Accepted: 28.06.2024

सारांश

इस शोध प्रपत्र में मैंने विषय "भावनात्मक दुर्व्यवहार और वरिष्ठ नागरिकों पर इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव" का यथासंभव वर्णन किया है। वरिष्ठ नागरिकों का भावनात्मक शोषण एक महत्वपूर्ण और अक्सर अनदेखा किया जाने वाला मुद्दा है, जिसका गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। यह शोधपत्र वृद्ध आबादी में भावनात्मक शोषण के कारणों, लक्षणों और मनोवैज्ञानिक परिणामों की जांच करता है। भावनात्मक शोषण, जिसमें मौखिक हमले, अपमान, धमकी और अलगाव शामिल हैं, वरिष्ठ नागरिकों की मानसिक और भावनात्मक भलाई को कमजोर करता है, जिससे अवसाद, चिंता और संज्ञानात्मक गिरावट जैसे गंभीर परिणाम सामने आते हैं। योगदान देने वाले कारकों में देखभाल करने वाले का तनाव, निर्भरता, सामाजिक अलगाव और आर्थिक भेद्यता शामिल हैं। शोधपत्र भावनात्मक शोषण के सामान्य लक्षणों पर प्रकाश डालता है, जिसमें मूड में बदलाव, सामाजिक गतिविधियों से दूर रहना और नींद में गड़बड़ी जैसे शारीरिक लक्षण शामिल हैं। यह सामुदायिक शिक्षा, देखभाल करने वाले का समर्थन, कानूनी उपाय और मानसिक स्वास्थ्य संसाधनों सहित व्यापक रोकथाम और हस्तक्षेप रणनीतियों की आवश्यकता पर जोर देता है। प्रभावी रणनीतियों में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना, देखभाल करने वाले को प्रशिक्षण देना, सहायक नीतियों को लागू करना और मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना शामिल है। भावनात्मक शोषण को संबोधित करने के लिए वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। निष्कर्ष भावनात्मक दुर्व्यवहार के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने और बुजुर्गों की भलाई को बढ़ावा देने के लिए सहायक वातावरण और मजबूत समर्थन प्रणाली बनाने के महत्व को रेखांकित करते हैं।

मुख्य शब्द : भावनात्मक दुर्व्यवहार, वरिष्ठ नागरिक, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, अवसाद, चिंता, सामाजिक अलगाव, रोकथाम रणनीतियाँ, मानसिक स्वास्थ्य आदि।

प्रस्तावना

वरिष्ठ नागरिकों का भावनात्मक शोषण एक व्यापक लेकिन अक्सर अनदेखा किया जाने वाला मुद्दा है जो उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। जैसे-जैसे वैश्विक आबादी बढ़ती जा रही है, इस कमजोर समूह में भावनात्मक शोषण की गतिशीलता और परिणामों को समझना बहुत जरूरी होता जा रहा है। भावनात्मक शोषण, जिसे मनोवैज्ञानिक शोषण भी कहा जाता है, में मौखिक हमले, धमकी, डराना, अपमान और अलगाव शामिल है, जिससे गंभीर मनोवैज्ञानिक संकट पैदा होता है। शारीरिक शोषण के विपरीत, भावनात्मक शोषण कोई स्पष्ट निशान नहीं छोड़ता है, जिससे इसे पहचानना और संबोधित करना मुश्किल हो जाता है।

वरिष्ठ नागरिक, जो अक्सर सहायता के लिए परिवार के सदस्यों या देखभाल करने वालों पर निर्भर होते हैं, भावनात्मक शोषण के लिए विशेष रूप से अतिसंवेदनशील होते हैं। संज्ञानात्मक गिरावट, शारीरिक कमजोरी, सामाजिक अलगाव और वित्तीय निर्भरता जैसे कारक उनकी कमजोरी को बढ़ाते हैं। बुजुर्ग व्यक्तियों में भावनात्मक शोषण क्रोनिक डिप्रेशन, चिंता, नींद की गड़बड़ी और जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय कमी जैसे लक्षणों के माध्यम से प्रकट हो सकता है। इस तरह के दुर्व्यवहार का मनोवैज्ञानिक असर दीर्घकालिक मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकता है, जिसमें पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (PTSD), गंभीर अवसाद और आत्महत्या की प्रवृत्ति शामिल है।

वरिष्ठ नागरिकों में भावनात्मक दुर्व्यवहार का अध्ययन करने के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। जैसे-जैसे व्यक्ति की उम्र बढ़ती है, खुद के लिए वकालत करने की उनकी क्षमता कम होती जाती है, जिससे प्रभावी निवारण

और उपचारात्मक उपायों को लागू करने के लिए इस मुद्दे की व्यापक समझ की आवश्यकता होती है। इस शोध का प्राथमिक उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों पर भावनात्मक दुर्व्यवहार के कारणों, अभिव्यक्तियों और मनोवैज्ञानिक प्रभावों का पता लगाना है। इन पहलुओं पर गहराई से विचार करके, अध्ययन का उद्देश्य कई बुजुर्ग व्यक्तियों की मूक पीड़ा पर प्रकाश डालना और हस्तक्षेप और रोकथाम के लिए रणनीतियों का प्रस्ताव करना है।

भावनात्मक दुर्व्यवहार की परिभाषा और प्रकार

भावनात्मक दुर्व्यवहार, जिसे मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार भी कहा जाता है, दुर्व्यवहार का एक रूप है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार करता है जो उसके भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकता है। इस दुर्व्यवहार में अक्सर मौखिक हमले, धमकी, डराना, अपमान और अलगाव शामिल होता है। शारीरिक दुर्व्यवहार के विपरीत, जो दिखाई देने वाले निशान छोड़ता है, भावनात्मक दुर्व्यवहार पीड़ित की आत्म और सुरक्षा की आंतरिक भावना को प्रभावित करता है, जिससे गहरा मनोवैज्ञानिक संकट और दीर्घकालिक मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं।

भावनात्मक दुर्व्यवहार के प्रकार

- मौखिक दुर्व्यवहार:** पीड़ित को नीचा दिखाने और अपमानित करने के उद्देश्य से नाम-पुकारना, अपमान करना, लगातार आलोचना करना और अपमानजनक टिप्पणियाँ करना शामिल है।
- अलगाव:** पीड़ित की सामाजिक बातचीत को प्रतिबंधित करता है, उन्हें दोस्तों, परिवार और सहायता प्रणालियों से अलग करता है, जिससे दुर्व्यवहार करने वाले पर उनकी निर्भरता बढ़ जाती है।

3. **धमकी और भय**—पीड़ित को नियंत्रित करने और उसे मजबूर करने के लिए उसे नुकसान पहुंचाने, त्यागने या गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी जैसी भय की रणनीति का उपयोग करना।
4. **अपमान**—पीड़ित को सार्वजनिक या निजी तौर पर शर्मिंदा या शर्मिंदा करने के लिए डिजाइन की गई कार्रवाइयों को शामिल करना, उनके आत्मसम्मान और गरिमा को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाना।
5. **उपेक्षा**—पीड़ित की भावनात्मक जरूरतों को अनदेखा करना, सहायता प्रदान करने में विफल होना और स्नेह या अनुमोदन को रोकना, जिससे बेकार और उपेक्षा की भावना पैदा होती है।

शोध प्रपत्र के उद्देश्य

1. पारिवारिक परिवेश में बुजुर्ग व्यक्तियों द्वारा अनुभव किए जाने वाले भावनात्मक दुर्व्यवहार के प्रकारों और आवृत्ति की जांच करना।
2. विश्लेषण करना कि पारिवारिक विकास के विभिन्न पहलू, जैसे संचार, समर्थन संरचनाएँ और संबंधपरक गतिशीलता, भावनात्मक दुर्व्यवहार की घटना और प्रभाव को कैसे प्रभावित करते हैं।
3. मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-सम्मान और समग्र कल्याण पर पड़ने वाले प्रभावों सहित वरिष्ठ नागरिकों पर भावनात्मक दुर्व्यवहार के मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक परिणामों का निर्धारण करें।

वरिष्ठ नागरिकों द्वारा सामना किए जाने वाले दुर्व्यवहार के सामान्य रूप

वरिष्ठ नागरिक शारीरिक कमजोरी, संज्ञानात्मक गिरावट, सामाजिक अलगाव और देखभाल करने वालों पर निर्भरता जैसे कारकों के कारण विभिन्न प्रकार के दुर्व्यवहार के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं। उनके द्वारा सामना किए जाने वाले सबसे आम प्रकार के दुर्व्यवहार में शामिल हैं—

1. **शारीरिक दुर्व्यवहार**— इसमें शारीरिक बल का उपयोग शामिल है जिसके परिणामस्वरूप शारीरिक चोट, दर्द या हानि हो सकती है। इसमें मारना, थप्पड़ मारना, धक्का देना और प्रतिबंधों का अनुचित उपयोग शामिल है। शारीरिक दुर्व्यवहार से गंभीर चोटें और दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं।
2. **भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार**—भावनात्मक दुर्व्यवहार में मौखिक हमले, धमकी, डराना, अपमान और अलगाव शामिल हैं। यह पीड़ित की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक मलाई को नुकसान पहुंचाता है, जिससे चिंता, अवसाद और जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय कमी आती है। इस प्रकार का दुर्व्यवहार अक्सर कम दिखाई देता है लेकिन शारीरिक दुर्व्यवहार जितना ही हानिकारक होता है।
3. **वित्तीय दुर्व्यवहार**—दइस प्रकार के दुर्व्यवहार में किसी बुजुर्ग के धन, संपत्ति या परिसंपत्तियों का अवैध या अनुचित उपयोग शामिल है। इसमें पैसे या संपत्ति चुराना, हस्ताक्षरों को जाली बनाना, बुजुर्गों को वित्तीय लेन-देन के लिए मजबूर करना और क्रेडिट कार्ड का अनधिकृत उपयोग करना शामिल है। वित्तीय दुरुपयोग वरिष्ठ नागरिकों को उनकी बुनियादी जरूरतों के लिए संसाधनों के बिना छोड़ सकता है।
4. **यौन शोषण**— इसमें किसी बुजुर्ग के साथ किसी भी तरह का गैर-सहमति वाला यौन संपर्क शामिल है। इसमें अवांछित स्पर्श, यौन हमला और यौन कृत्यों के लिए मजबूर करना शामिल है। यौन शोषण विशेष रूप से दर्दनाक होता है और इससे गंभीर मनोवैज्ञानिक और शारीरिक परिणाम हो सकते हैं।

5. **आत्म-उपेक्षा**—हालाँकि दूसरों द्वारा नहीं किया जाता है, आत्म-उपेक्षा तब होती है जब कोई बुजुर्ग अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में विफल रहता है, अक्सर मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं, संज्ञानात्मक गिरावट या मादक द्रव्यों के सेवन के कारण। इसमें खराब स्वच्छता, अपर्याप्त पोषण और चिकित्सा स्थितियों की उपेक्षा शामिल है।

भावनात्मक दुर्व्यवहार के कारण

वरिष्ठ नागरिकों का भावनात्मक दुर्व्यवहार एक जटिल मुद्दा है जिसमें कई योगदान कारक हैं। प्रभावी रोकथाम और हस्तक्षेप रणनीतियों को विकसित करने के लिए इन कारणों को समझना आवश्यक है। प्राथमिक कारणों में शामिल हैं:

1. देखभाल करने वाले का तनाव

देखभाल करने वाले, चाहे वे परिवार के सदस्य हों या पेशेवर सहायक, अक्सर उच्च स्तर के तनाव का अनुभव करते हैं। निरंतर देखभाल प्रदान करने की माँग, विशेष रूप से पुरानी बीमारियों या संज्ञानात्मक हानि वाले वरिष्ठ नागरिकों के लिए, निराशा और क्रोध का कारण बन सकती है। यह तनाव भावनात्मक दुर्व्यवहार के रूप में प्रकट हो सकता है जब देखभाल करने वाले अपनी कुंठा बुजुर्गों पर निकालते हैं।

2. निर्भरता और शक्ति असंतुलन

वरिष्ठ नागरिक अक्सर दैनिक गतिविधियों और चिकित्सा आवश्यकताओं के लिए अपने देखभाल करने वालों पर निर्भर रहते हैं, जिससे शक्ति असंतुलन पैदा होता है। देखभाल करने वाले इस निर्भरता का फायदा उठा सकते हैं, भावनात्मक दुर्व्यवहार का उपयोग बुजुर्गों को नियंत्रित करने और हेरफेर करने के लिए एक उपकरण के रूप में कर सकते हैं। यह शक्ति गतिशीलता वरिष्ठ नागरिकों के लिए बोलना या मदद माँगना मुश्किल बनाती है।

3. आर्थिक निर्भरता

कई वरिष्ठ नागरिक अपने देखभाल करने वालों या परिवार के सदस्यों पर आर्थिक रूप से निर्भर होते हैं, जिससे शोषण और दुर्व्यवहार हो सकता है। आर्थिक निर्भरता वरिष्ठ नागरिकों को फंसा हुआ और शक्तिहीन महसूस करा सकती है, वित्तीय सहायता खोने के डर से वे भागने या दुर्व्यवहार की रिपोर्ट करने में असमर्थ हो सकते हैं।

4. संज्ञानात्मक गिरावट

मनोभ्रंश और अल्जाइमर रोग जैसी संज्ञानात्मक हानि वरिष्ठ नागरिकों को भावनात्मक दुर्व्यवहार के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकती है। वे दुर्व्यवहार को पहचानने या इसकी सही तरीके से रिपोर्ट करने में कम सक्षम हो सकते हैं। दुर्व्यवहार करने वाले उनके संज्ञानात्मक गिरावट का लाभ उठाकर उन्हें हेरफेर और नियंत्रित कर सकते हैं।

5. पारिवारिक गतिशीलता और पिछले रिश्ते

अव्यवस्थित पारिवारिक गतिशीलता और पिछले रिश्ते भावनात्मक दुर्व्यवहार में योगदान कर सकते हैं। अनसुलझे संघर्ष या नाराजगी वाले परिवार के सदस्य अपनी कुंठाओं को बुजुर्गों की ओर निर्देशित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, अपमानजनक व्यवहार के पैटर्न पीढ़ियों तक जारी रह सकते हैं।

6. सामाजिक दृष्टिकोण और आयुवाद

बुजुर्गों और वरिष्ठों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण भावनात्मक दुर्व्यवहार में योगदान दे सकता है। आयुवाद, या उम्र के आधार पर भेदभाव, बुजुर्गों के अनादर और अवमूल्यन का कारण बन सकता है। यह अवमूल्यन भावनात्मक दुर्व्यवहार के रूप में प्रकट हो सकता है, जिसमें देखभाल करने वाले और अन्य लोग वरिष्ठों के साथ दुर्व्यवहार को उचित मानते हैं।

भावनात्मक दुर्व्यवहार का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

वरिष्ठ नागरिकों पर भावनात्मक दुर्व्यवहार का मनोवैज्ञानिक प्रभाव गहरा और दीर्घकालिक हो सकता है, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक कल्याण और जीवन की समग्र गुणवत्ता को प्रभावित करता है। प्रभावी हस्तक्षेप और सहायता प्रणाली विकसित करने के लिए इन प्रभावों को समझना महत्वपूर्ण है।

1. अवसाद

भावनात्मक दुर्व्यवहार के सबसे आम मनोवैज्ञानिक प्रभावों में से एक अवसाद है। वरिष्ठ नागरिकों को लगातार उदासी, निराशा की भावना और उन गतिविधियों में रुचि की कमी का अनुभव हो सकता है, जिनका वे पहले आनंद लेते थे। इससे सामाजिक अलगाव और और अधिक अलगाव हो सकता है, जिससे दुर्व्यवहार का प्रभाव और बढ़ सकता है।

2. चिंता और पुराना तनाव

भावनात्मक दुर्व्यवहार गंभीर चिंता और पुराना तनाव पैदा कर सकता है। वरिष्ठ नागरिक लगातार तनाव में रह सकते हैं, अपने दुर्व्यवहारकर्ता से संभावित खतरों या नुकसान के बारे में चिंता करते रहते हैं। तनाव की यह पुरानी स्थिति सिरदर्द, मांसपेशियों में तनाव और जठरांत्र संबंधी समस्याओं जैसे शारीरिक लक्षणों को जन्म दे सकती है, जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता और भी कम हो जाती है।

3. पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (PTSD)

लंबे समय तक भावनात्मक दुर्व्यवहार के परिणामस्वरूप PTSD हो सकता है, जिसमें पलेशबैक, बुरे सपने और दुर्व्यवहार के अनुभवों से संबंधित गंभीर चिंता शामिल है। PTSD से पीड़ित वरिष्ठ नागरिकों को दैनिक जीवन में काम करने में कठिनाई हो सकती है और वे अक्सर ऐसी स्थितियों से बचते हैं जो उन्हें दुर्व्यवहार की याद दिलाती हैं।

4. कम आत्म-सम्मान और आत्म-मूल्य

लगातार मौखिक हमले, अपमान और अपमान एक वरिष्ठ नागरिक के आत्म-सम्मान और आत्म-मूल्य की भावना को नष्ट कर सकते हैं। वे अपने दुर्व्यवहारकर्ता से नकारात्मक संदेशों को आंतरिक रूप से ग्रहण कर सकते हैं, जिससे बेकार और अपर्याप्तता की भावनाएँ पैदा हो सकती हैं।

5. संज्ञानात्मक गिरावट

भावनात्मक दुर्व्यवहार संज्ञानात्मक गिरावट में योगदान दे सकता है, जिसमें स्मृति हानि, भ्रम और एकाग्रता और निर्णय लेने में कठिनाई शामिल है। यह गिरावट अक्सर दुर्व्यवहार से जुड़े तनाव और चिंता से बढ़ जाती है, जिससे वरिष्ठ नागरिकों के लिए दैनिक कार्यों का सामना करना और स्वतंत्रता बनाए रखना कठिन हो जाता है।

6. आत्महत्या का जोखिम बढ़ जाता है

अवसाद, चिंता और आत्म-सम्मान की कम होती भावना के संयोजन से कुछ वरिष्ठ नागरिक आत्महत्या पर विचार कर सकते हैं या आत्महत्या का प्रयास कर सकते हैं। किसी अपमानजनक स्थिति में फंस जाने का एहसास, जिसमें कोई रास्ता नहीं है, भारी और निराशाजनक हो सकता है।

रोकथाम और हस्तक्षेप की रणनीतियाँ

वरिष्ठ नागरिकों के भावनात्मक शोषण को संबोधित करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जिसमें रोकथाम, प्रारंभिक हस्तक्षेप और सहायता प्रणाली शामिल होती है। प्रभावी रणनीतियों में सामुदायिक जागरूकता, कानूनी ढाँचे, देखभाल करने वाले का समर्थन और मानसिक स्वास्थ्य संसाधन शामिल होते हैं। रोकथाम और हस्तक्षेप के लिए यहाँ मुख्य रणनीतियाँ दी गई हैं:

1. सामुदायिक शिक्षा और जागरूकता

सार्वजनिक जागरूकता अभियानरू भावनात्मक शोषण के संकेतों और वरिष्ठ नागरिकों पर इसके प्रभाव के बारे में जनता को शिक्षित करने के लिए अभियान चलाएँ। सम्मानजनक व्यवहार के महत्व और शोषण की पहचान करने और रिपोर्ट करने में सतर्कता की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाएँ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम: भावनात्मक शोषण को पहचानने और उसका जवाब देने के लिए समुदाय के सदस्यों, स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों और देखभाल करने वालों को प्रशिक्षण प्रदान करें। प्रशिक्षण में चेतावनी के संकेतों की पहचान करना, मनोवैज्ञानिक प्रभावों को समझना और उठाए जाने वाले उचित कदमों को जानना शामिल होना चाहिए।

2. देखभाल करने वालों के लिए समर्थन

देखभाल करने वाले की सहायता सेवाएँ: देखभाल करने वालों के लिए परामर्श, राहत देखभाल और तनाव प्रबंधन कार्यक्रम जैसी सहायता सेवाएँ प्रदान करें। देखभाल करने वाले के तनाव को कम करने से अपमानजनक व्यवहार को रोकने में मदद मिल सकती है।

शिक्षा और प्रशिक्षण: देखभाल करने वालों को तनाव प्रबंधन, संचार में सुधार और दयालु देखभाल प्रदान करने के लिए कौशल और रणनीतियों से लैस करें। प्रशिक्षण में संघर्ष समाधान और भावनात्मक समर्थन तकनीकों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

3. कानूनी और नीतिगत उपाय

कानून: ऐसे कानूनों और नीतियों की वकालत करें जो वरिष्ठ नागरिकों को भावनात्मक शोषण से बचाएँ। इसमें भावनात्मक शोषण की कानूनी परिभाषाएँ बनाना, अपराधियों के लिए दंड निर्धारित करना और शोषण की रिपोर्ट करने और जाँच करने के लिए प्रोटोकॉल स्थापित करना शामिल है।

रिपोर्टिंग तंत्र: संदिग्ध शोषण के लिए सुलभ रिपोर्टिंग तंत्र विकसित करें और बढ़ावा दें। सुनिश्चित करें कि वरिष्ठ नागरिकों, परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के लिए गोपनीय और सुरक्षित रूप से शोषण की रिपोर्ट करने के लिए स्पष्ट चैनल हों।

4. मानसिक स्वास्थ्य सहायता

परामर्श और चिकित्सा: भावनात्मक शोषण के पीड़ितों के लिए परामर्श और चिकित्सा सहित मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच प्रदान करें। चिकित्सा वरिष्ठ नागरिकों को आघात से उबरने, आत्म-सम्मान को फिर से बनाने और मुकाबला करने की रणनीतियाँ विकसित करने में मदद कर सकती है।

सहायता समूह: भावनात्मक शोषण का अनुभव करने वाले वरिष्ठ नागरिकों के लिए सहायता समूह स्थापित करें। ये समूह भावनात्मक समर्थन प्रदान कर सकते हैं, मुकाबला करने की रणनीतियाँ साझा कर सकते हैं और अकेलेपन की भावनाओं को कम कर सकते हैं।

5. सामाजिक नेटवर्क को मजबूत करना:

सामुदायिक जुड़ाव: वरिष्ठ नागरिकों को सामाजिक गतिविधियों और सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि अलगाव को कम किया जा सके और सहायक नेटवर्क का निर्माण किया जा सके। सामाजिक जुड़ाव भावनात्मक समर्थन प्रदान कर सकता है और दुर्व्यवहार के प्रति संवेदनशीलता को कम कर सकता है।

परिवार की भागीदारी: वरिष्ठ नागरिकों के लिए सहायक वातावरण बनाने में परिवार के सदस्यों को शामिल करें। भावनात्मक दुर्व्यवहार के संकेतों और स्वस्थ संबंधों को बनाए रखने के महत्व के बारे में परिवारों को शिक्षित करें।

6. निगरानी और मूल्यांकन

नियमित मूल्यांकन: दुर्व्यवहार के संभावित मुद्दों की पहचान करने और उन्हें संबोधित करने के लिए वरिष्ठ देखभाल वातावरण का नियमित मूल्यांकन लागू करें। इसमें देखभाल करने वाले की बातचीत की निगरानी करना और वरिष्ठ नागरिकों की भलाई का आकलन करना शामिल है।

प्रतिक्रिया तंत्र: देखभाल की गुणवत्ता और उपचार के बारे में चिंताओं की रिपोर्ट करने के लिए वरिष्ठ नागरिकों और उनके परिवारों के लिए प्रतिक्रिया तंत्र स्थापित करें। नियमित प्रतिक्रिया समस्याओं को जल्दी पहचानने और देखभाल प्रथाओं को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है।

निष्कर्ष— वरिष्ठ नागरिकों का भावनात्मक शोषण एक गंभीर चुनौती पेश करता है जो उनके मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक कल्याण को महत्वपूर्ण रूप से

प्रभावित करता है। भावनात्मक शोषण की व्यापक प्रकृति, मौखिक हमलों, धमकी और अलगाव द्वारा चिह्नित, अवसाद, चिंता और संज्ञानात्मक गिरावट जैसे गंभीर परिणामों की ओर ले जाती है। इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें जागरूकता बढ़ाना, देखभाल करने वालों का समर्थन करना, मजबूत कानूनी ढाँचे को लागू करना और सुलभ मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना शामिल है। प्रभावी रोकथाम और हस्तक्षेप रणनीतियों को जनता को शिक्षित करने, देखभाल करने वालों के तनाव को कम करने और वरिष्ठ नागरिकों को मदद लेने के लिए सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। सहायक वातावरण को बढ़ावा देने और प्रभावी सहायता प्रणाली बनाने के माध्यम से, हम भावनात्मक शोषण के प्रतिकूल प्रभावों को कम कर सकते हैं और बुजुर्ग व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं। वरिष्ठ नागरिकों की गरिमा और सुरक्षा सुनिश्चित करना न केवल एक सामाजिक जिम्मेदारी है, बल्कि हमारे समुदाय के सबसे कमजोर सदस्यों की सुरक्षा के लिए हमारी प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है।

संदर्भ ग्रन्थ सुची

1. अमीरमोहम्मदी, एम., निकपेमा, एन., नेगरंडेह, आर., हघानी, एस., और अमरोल्लाह मजदाबादी, जेड. (2023)। भावनात्मक बुजुर्ग दुर्व्यवहार और परिवार के विकासात्मक कार्य के बीच संबंध। नर्सिंग ओपन, 10(4), 2485/2491।
2. ग्रीनस्पैन, एस., और विण्डर, एस. (2006)। ऑटिज्म को शामिल करना: बच्चों को संबंध बनाने, संवाद करने और सोचने में मदद करने के लिए फ्लोरटाइम दृष्टिकोण का उपयोग करना। दा कैपो लाइफ्लॉन्ग बुक्स।
3. जैक्सन, एस. एल., और हाफमेइस्टर, टी. एल. (2011)। बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार से जुड़े जोखिम कारक: बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार के प्रकार के आधार पर अंतर करने का महत्व। हिंसा और पीड़ित, 26(6), 738/757।
4. कैस्पिय, आर., और कार्सन, आर. (2016)। ऑस्ट्रेलिया में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार। पारिवारिक मामले, 98, 64/73।
5. केलर, ई., सैंटोस, सी., क्यूसेक, डी., वैली, एम., फेरारा, डी., लुडेस, बी., मैगिन, पी., पेन-जेम्स, जे. जे., और विंसा, डी. (2019)। संदिग्ध बुजुर्ग दुर्व्यवहार की जांच के लिए यूरोपीय कानूनी चिकित्सा परिषद (ईसीएलएम) के दिशानिर्देश। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लीगल मेडिसिन, 133(1), 317/322।
6. केनेली, एस., ओशनील, डी., और ओशब्रान, जे. जी. (2011)। आवासीय देखभाल में बुजुर्ग दुर्व्यवहार। द लैंसेट, 377(9771), 1076।
7. कुर्कुर्गिना, ई., लैंग, बी. सी., लामा, एस. डी., बर्क-लीवर, ई., याफे, एम. जे., मोनिन, जे. के., और हम्फ्रीज, डी. (2018)। बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार का पता लगाना क्षेत्र में कानून प्रवर्तन द्वारा बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार संदेह सूचकांक के संभावित उपयोग की खोज करना। जर्नल ऑफ एल्डर एब्यूज एंड नेगलेक्ट, 30(2), 103/126।
8. भाटिया, एम.एस., और भाटिया, एम.एस. (2018)। भारत में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार: एक समीक्षा। इंडियन जर्नल ऑफ साइकियाट्री, 60(3), 274/280।
9. चोपड़ा, ए., और चौधरी, एस. (2017)। भारत में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार और इसकी रोकथाम: एक अवलोकन। जर्नल ऑफ जेरिएट्रिक केयर एंड रिसर्च, 4(2), 42-45।
10. गुप्ता, एस., और कुमार, आर. (2019)। भारत में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार में योगदान देने वाले कारक: एक गुणात्मक अध्ययन। एशियन जर्नल ऑफ साइकियाट्री, 41, 35/41।